SHANKARA - MAYA AUR AVIDYA

शंकर - माया और अविद्या सम्बन्धी विचार ।

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan

(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

अद्वैत वेदांत के सार को इस श्लोक के द्वारा व्यक्त किया गया है - ब्रह्म सत्यं जगनमिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः ।अर्थात ब्रह्म ही सत्य है, जगत मिथ्या है और जीव ब्रह्म ही है,उससे भिन्न नहीं। ब्रह्म और आत्मा एक हैं।दोनों परम तत्व के पर्याय हैं।जीव और जगत दोनों मायाकृत हैं।वेदांत में माया,अविद्या ,अध्यास ,अध्यारोप ,भ्रान्ति ,विवर्त ,भ्रम ,नामरूप ,अव्यक्त ,मूल प्रकृति आदि शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया गया है पर बाद के वेदांतियों ने माया और अविद्या में भेद किया है।उनके अनुसार माया भावात्मक है जबकि अविद्या निषेधात्मक है।माया को भावात्मक इसलिये कहा गया है कि माया के द्वारा ब्रह्म सम्पूर्ण विश्व का प्रदर्शन करता है। अविद्या ज्ञान के अभाव को संकेत करने के कारण निषेधात्मक है।

माया के निवास को लेकर जो प्रश्न उठते हैं उसके प्रतिउत्तर में शंकर का कहना है कि माया ब्रह्म में निवास करती है।यद्यपि माया का आश्रय ब्रह्म है पर ब्रह्म माया से प्रभावित नहीं होता।इसे उपमा के द्वारा समझा जा सकता है - जिस प्रकार रूपहीन आकाश पर आरोपित नीले रंग का प्रभाव आकाश पर नहीं पड़ता तथा जिस प्रकार जादूगर जादू की प्रवीणता से स्वयं प्रभावित नहीं होता उसी प्रकार माया भी ब्रह्म को प्रभावित करने में असफल रहती है।

सांख्य ने यह माना है कि प्रकृति से नानारूपात्मक जगत की व्याख्या होती है तथा सम्पूर्ण विश्व प्रकृति का रूपांतरित रूप है।शंकर जगत की व्याख्या के लिये माया को लेते हैं।वे माया के आधार पर विश्व की विविधता की व्याख्या करते हैं।माया ही नानारूपात्मकजगत को उपस्थित करती है।

शंकर की माया और सांख्य की प्रकृति दोनों भौतिक और अचेतन हैं। माया और प्रकृति दोनों जड़ हैं।दोनों मोक्ष प्राप्ति में बाधक हैं।पुरुष प्रकृति से भिन्न है पर अज्ञानतावश वह प्रकृति से अपनापन का सम्बन्ध स्थापित कर लेता है जिससे वह बन्धन में पड़ जाता है और मोक्ष तभी सम्भव हो पाता है जब प्रकृति अपने को पुरुष से भिन्न होने का ज्ञान प्राप्त कर लेता है।शंकर का भी मानना है कि मोक्ष की प्राप्ति तभी संभव है जब अविद्या का जो माया का ही दूसरा रूप है अंत हो जाय।यद्यपि माया मुक्त है पर वह अविद्या के कारण बन्धन ग्रस्त हो जाती है।

माया की अनेक विशेषताएं हैं।कुछ प्रमुख विशेषतायें निम्न प्रकार हैं : -

माया सांख्य की प्रकृति के समान भौतिक और जड़ है किंतु सांख्य की प्रकृति के विपरीत ना तो सत् है और ना स्वतंत्र है।

माया ब्रह्म की अभिन्न शक्ति है।यह ब्रह्म पर आश्रित है और उससे अपृथक है। वस्तुतः माया और ब्रह्म में कोई संबंध नहीं हो सकता,न भेद,न अभेद और न भेदाभेद, उनके इस प्रातीतिक संबंध को तादात्मय नाम दिया गया है।

माया अनादि है।

माया भाव रूप है किंतु सत् नहीं है। यह बताने के लिए कि माया केवल अभाव रुप नहीं है इसे भाव रूप कहा जाता है। माया अभाव रुप भी है और और भाव रूप भी है। इसका अभाव पक्ष 'आवरण' कहलाता है जो तत्व को आवृत कर देता है उस पर पर्दा डाल देता है जिससे तत्व का ज्ञान नहीं हो पाता।वस्तुतः माया न अभाव है और ना भाव है।

माया विवर्त है यह आभास मात्र है।रस्सी भ्रम में भी सर्प के रूप में परिवर्तित नहीं होती। माया की प्रातीतिक अर्थात व्यवहारिक या प्रातिभासिक सत्ता है।

माया का आश्रय और विषय ब्रह्म ही है तथापि ब्रह्म माया से सर्वथा और सर्वदा अलिप्त है जिस प्रकार आकाश तलमलिनता से या रस्सी सर्प से अलिप्त है।

माया के मूलतः दो ही कार्य हैं।डॉ०राधाकृष्णन के शब्दों में,"सत्य पर पर्दा डालना और असत्य को प्रस्थापित करना माया के दो कार्य हैं"(Maya has the two functions of concealment of the real and the projection of the unreal)। माया के कारण वस्तु पर आवरण पड़ जाता है।जिस प्रकार रस्सी में दिखाई देने वाला साँप रस्सी के वास्तविक स्वरूप पर पर्दा डाल देता है उसी प्रकार माया सत्य पर पर्दा डाल देती है।माया का यह निषेधात्मक कार्य है।माया के इस कार्य को आवरण(Cocealment) कहा जाता है।माया का दूसरा कार्य यह है कि वह सत्य के स्थान पर दूसरी वस्तु को उपस्थित करती है।माया सिर्फ रस्सी के वास्तविक स्वरूप को ही नहीं ढक लेती बल्कि रस्सी के स्थान पर सांप की प्रतीति भी उपस्थित करती है।माया का यह भवात्मक कार्य है।माया के इस कार्य को विक्षेप(Projection) कहा जाता है।